राजस्थान विधान सभा का कार्य-विवरण

अंक ३] द्वितीय विधान सभा के तृतीय सत्र, १६५८ का १४वाँ दिवस [संख्या ११

सोमवार, २४ फरवरी, १६५८

विधान सभा की बैठक म. पू. ११.१४ बजे विधान सभा भवन, जयपुर, में प्रारम्भ हुई ।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

स्वर्गीय मौलाना अबुल कलाम आजाद के निधन पर श्रद्धांजलियां

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मन्त्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, परसों भारतवर्ष को यह दुखद संवाद सुनना पड़ा कि देश की आजादी की लड़ाई में जिस महान् व्यक्ति ने हमारा मार्ग दर्शन किया, निरन्तर पिछले ४० वर्ष के अन्दर देश के अगुआ की तरह हमको प्रेरणा दी वे हमारे बीच से चल बसे हैं । मौलाना आजाद देश के लिये, चाहे वे किसी जाति के हों, किसी वर्ग के हों, सब के लिए एक प्रेरणा के श्रोत थे । उनकी विद्वता, कुरान पर उन्होंने जो कुछ टीका लिखी है न केवल भारतवर्ष में लेकिन संसार के अन्य कई मुल्कों में उसकी प्रसिद्धि और आज के दिन भी उसी आदर के साथ दूसरे देशों में देखी जाती है । भारतवर्ष में उनके सामने कई ऐसे मौके आये कि वे बहुत ऊंचे स्थान पर अंग्रेजों के राज्य में भी जा सकते थे और जब देश के अन्दर इस प्रकार की स्थिति थी कि बहुत से उतार-चढ़ाव आये तब भी उन्होंने बराबर इस बात पर अपना लक्ष्य रखा कि भारतवर्ष में हिन्दू और मुसलमानों को साथ रह कर देश को आगे बढ़ाना है । उनकी तन्दुरस्ती खराब होते हुए भी निरन्तर वे देश को आगे बढ़ाने के काम में लगे रहे । महात्मा गांधी के वे एक अनन्य साथी थे और हमारे प्रधान मंत्री के वे एक बहुत ही महत्वपूर्ण सलाहकार थे और हम में से भी जिनको भी उनके निकट आने का अवसर प्राप्त हुआ, हमने यह देखा कि कितनी जल्दी वे एक निर्णय पर पहुंचते थे और जिस निर्णय पर वे पहुंचते थे उस पर मजबूती के साथ टिके रहते थे । देश के अन्दर कई मौके ऐसे आए और खास तौर से तब जब कि द्वितीय महा-युद्ध हो रहा था उस मौके पर मौलाना आजाद इस राज्य के थे कि हमें इस मौके पर आजादी की जंग लड़नी चाहिये और उन्होंने इस बात को, जो उस वक्त अखबार निकालता था उसके जरिये और कांग्रेस में बुलन्द किया । वे खुद में शानदार व्यक्ति थे और उन्होंने देश को इस प्रकार का नेतृत्व दिया, उनकी विचार-धारा और भाषणों को जो कोई सुनता और जिस किसी ने सुना है वह कभी भूल नहीं सकता कि जो कोई इस प्रकार का वक्तव्य सुनता, उनके कहने का तरीका और करने का तरीका यह था कि उस पर लोग मोहित हो जाते और आज हम देखते हैं कि

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

जिस वक्त ऐसे रहनुमा की जरूरत थी हमारे बीच से उठ गये और देश में उनसे बहुत बड़ी क्षति हुई है । मैं समझता हूं कि वह क्षति किसी भी तरह से पूरी नहीं हो सकती । जो उनकी वाणी थी और व्यक्तित्व था उसको पूरा करना असम्भव है । मैं उनके प्रति और उनके परिवार के प्रति और निकट के और व्यक्तियों के प्रति श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ ।

रावल श्री नरेन्द्रसिंह (दूदू–रामराज्य परिषद) : अध्यक्ष महोदय, परसों के दिन भारतवर्ष में मौलाना आज़ाद के स्वर्गवास पर जो भयंकर क्षति हुई है वह अनभ्रवज्रपात के तौर पर हुई है । उनका जो व्यक्तित्व और उनके जो काम और देश सेवाएं, स्वतन्त्रता संग्राम में जिस तरह से उन्होंने योग दिया और लड़े वे भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने की चीज़ है और जैसा कि मुख्य मन्त्री ने अभी फरमाया, वह क्षति इस प्रकार की है कि वे, अगर यह भी कहा जाए कि पूर्ण हो सकती है तो यह बड़ी कठिन समस्या है, जैसा कि उनके नाम से प्रतीत होता है (मौलाना आजाद) आजाद, आजादी या स्वतन्त्रता संग्राम के लिये उनका व्यक्तित्व बहुत ही ऊंचा रहा है, मैं राम राज्य सभा की ओर से उनके अक्समात और असामयिक स्वर्गवास पर, हमारे मुख्य मन्त्री जी के एक शब्द को मानता हुआ, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मृतात्मा और उनके कुटुम्ब को भगवान दृढ़ता दे और भारत की जो क्षति इस वक्त जब कि बहुत से महानुभावों की बड़ी आवश्यकता है, हुई है, वह क्षति पूरी नहीं हो सकती ।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर शहर, प्रजा समाजवादी दल) : मौलाना आजाद के निधन के सामाचारों सेसारे देश में एक शोक की लहर छायी हुई है । सही माने में मौलाना आजाद इस आजादी की लड़ाई के, जो हमारे मुल्क की आजादी की लड़ाई थी, उस लड़ाई के एक स्तम्भ थे । यों तो राष्ट्रपति हमारे देश के राष्ट्रपति हैं, पर आजादी के पहले सही माने में हमारे देश की आजादी की जंग के राष्ट्रपति, जिनको राष्ट्रपति के नाम से पुकारते थे, वे मौलाना आजाद ही थे और जिनके नेतृत्व में हमारे मुल्क को आजादी मिली वे मौलाना आजाद ही थे । जहां तक हमारे देश की लड़ाई में अगर किसी का नाम स्वर्णिय अक्षरों में लिखा जावेगा, इस माने में कि किसके नेतृत्व में उस वक्त देश को आजादी मिली तो मैं समझता हूँ कि मौलाना आजाद का नाम सबसे ऊंचा रहेगा । मौलाना आजाद आज इस देश में नहीं रहे । लेकिन उनकी जो विचारधारा है, वो एक इस प्रकार की विचारधारा है जिसकी कि हमारे मुल्क के लिए जरूरत थी और उसके दो स्तम्भ थे, एक तो हिन्दुस्तान में मौलाना आजाद और दूसरे स्तम्भ पाकिस्तान में खान अब्दुल गफ्फार खां, जो फ्रन्टीयर गांधी के नाम से विख्यात हैं । ये दो व्यक्ति जो राष्ट्रीय विचारधाराओं से ओत-प्रोत थे और उनके विचारों द्वारा हमारे मुल्क को प्रेरणा मिलती रही है, लेकिन आज मौलाना आजाद हमारे बीच नहीं रहे । मुझे आज भी बहुत अच्छी तरह से याद है कि सन ४५ में जब मैं वर्धा में पढ़ता था, मौलाना आजाद जब जेल से छूट कर आये थे और उन्होंने जो भाषण उस समय दिया था, ऐसे तो कई दफा उनके भाषणों को मैंने सुना था, लेकिन जो भाषण उस वक्त हुआ था, उसमें जो विचार थे, जो भावना थी, वे वाकई इतनी महान थीं कि उनके अन्दर एक ओज था । एक वक्तृत्व कला में जो सबसे बड़ी चीज देखी जाती है

Page No.3

(श्री मुरलीधर व्यास)

वह ५ह है कि मनुष्यों के हृदयों में कितना गहरा असर करता है और वही ओज मौलाना आजाद की वक्तृत्व कला में था, उनके विचारों में था और इस देश में वे इस ढंग के एक निराले ही व्यक्ति थे। लेकिन वे आज नहीं हैं। वह दिन भी मुझे याद है कि जब नेहरूजी ने कहा था कि वे मेरे एक बड़े भाई हैं। सही माने में दो कौम के दो व्यक्ति थे, लेकिन दो कौम के दो होने पर भी एक ही थे, मौलाना आजाद और दूसरे हैं नेहरूजी और इन दोनों का जीवन इस प्रकार का था कि कोई कह नहीं सकता था कि दो कौम के होने पर भी दो हैं और एक ही दोनों को कहा जाता था। आज उनकी यह विचारधारा और भावना सारे मुल्क में एक अत्यन्त आवश्यक चीज है और आज उनके हमारे बीच में न होने पर भी जो विचारधारा उन्होंने अपने जीवन में अपनाये रखी, सारे जीवन इसी विचारधारा को लेकर जीये और अंतिम क्षणों तक राष्ट्रीय विचारधारा के थे, उसी विचारधारा और भावना की आज भी हमारे देश को आवश्यकता है और आज उनके हमारे बीच न रहने पर भी जो देन वे हमारे मुल्क को दे गये हैं उससे हम लोग लाभ उठावेंगे और स्थायी रूप से यह लाभ मिलता रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनकी दिवंगत आत्मा को श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं और शोक संतप्त परिवार के साथ अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री जगदीशप्रसाद माथुर (सीकर, जनसंघ) : माननीय अध्यक्ष, प्राजातन्त्रीय प्रणाली में विचारों की एकता नहीं भी हो सकती है, लेकिन जहां तक देश की एकता और स्वतन्त्रता का प्रश्न है वहां पर हमें इस प्रकार के नेताओं की खोज रहती है जो इस प्रकार के प्रश्नों पर हमें आगे मार्ग दिखा सकें। हम देखते हैं कि मौलाना आजाद ने जहां पर देश की एकता और स्वतन्त्रता का प्रश्न आया वहां पर उन्होंने जो अपने स्वधर्मावलम्बी बन्धु थे उनकी उपेक्षा और तिरस्कार कर उन सारी परिस्थितियों का दृढ़ता से सामना करते हुए जो मार्ग अपनाया, जिस विचारधारा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया वे उसी पर अन्तिम समय तक भी दृढ़ता के साथ चलते रहे। देश के स्वतन्त्रता संग्राम में वे एक जीवट योद्धा के रूप में लड़े। आज जब कि देश के सामने निर्माण का प्रश्न है, उसमें इसी प्रकार के नेताओं की, जो अपने जीवन में एक मार्ग अपना कर चलते हैं, उसमें सम्पूर्ण बाधाओं के आते हुए भी जो दृढ़ता से बढ़ सकें, इस प्रकार के नेतृत्व की देश को बड़ी आवश्यकता थी, एक प्रकार का बाह्य शक्तियों से जो खतरा आज हो रहा है उन शक्तियों के सामने लड़ने के लिए भी हमारे देश को इस प्रकार के नेताओं की आवश्यकता थी, मौलाना आजाद हमारे बीच नहीं रहे। वैसे तो हमारे देश के अन्दर ऐसे २ महान् पुरुष थे, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जिनकी बड़ी आवश्यकता थी लेकिन वे भी चले गये। किसी भी नेता के चले जाने के बाद सच्ची श्रद्धान्जली वही हो सकती है कि उन्होंने जो अपने जीवन काल में मार्ग अपनाया, जो लक्ष्य सामने रख कर जीवन भर उस पर चले, उन लक्ष्यों पर उनको सामने रखते हुए हम दृढ़ संकल्प के साथ चलते रहें। मौलाना आजाद की विचारधारा और उनके आदर्शों को, कहने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उन्हीं विचारधारा और आदर्शों के कारण ३४ वर्ष की अल्पायु में ही वे राष्ट्रीय कांग्रेस, जो उस समय स्वतन्त्रता की प्राप्ति के

(श्री जगदीशप्रसाद माथुर)

लिए यह एक ही संस्था थी, के राष्ट्रपति चुन लिये गये। उन्होंने देश को किस प्रकार आगे बढ़ाया, यह हमारे सामने है। आज मौलाना साहब नहीं हैं लेकिन उनके विचार देश के सामने विद्यमान रहेंगे। मैं परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री मोहरसिंह (चूरू; प्रगतिशील दल) : माननीय अध्यक्ष, परसों महान् विकराल काल ने मौलाना आजाद साहब को हमसे छीन लिया। आज मौलाना साहब के हमारे बीच न रहने से एक बहुत बड़ी राष्ट्रीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना नितान्त मुश्किल है। मरहूम मौलाना साहब में प्रकांड विद्वता, देश को सम्हालने की अनुपम रहनुमा शक्ति और किसी एक विषय पर किसी बात का निश्चय जल्दी से करना और उस पर पूर्ण रूप से, मजबूती से कायम रहना; ये उनके अन्दर अनुकरणीय गुण थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के मरहूम मौलाना साहब प्रतीक थे। ऐसे समय में देश को जब कि ऐसे देश भक्त रहनुमा की अत्यन्त आवश्यकता थी, हमारे बीच से उनके चले जाने से हमारे देश को बड़ी हानि हुई है। अतः मैं उस मौके पर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि मरहूम मौलाना साहब की दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और साथ ही हमें शक्ति और साहस प्रदान करें कि जिससे हम उनके आदर्श गुणों का अनुकरण कर सकें और देश का ज्यादा बड़ा काम कर सके।

श्री भोलानाथ (लक्ष्मणगढ़; कांग्रेस) : अध्यक्ष महोदय, आज वास्तव में यह हमारे लिए एक बहुत कड़ा अवसर है कि हम हमारे बहुत बड़े नेता के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करते हैं। हिन्दुस्तान जिस स्थिति में से गुजर रहा है वह बड़ी नाजुक है, खास तौर से हमारे प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलालजी के लिए। मौलाना अपने देश के बड़े नेता थे लेकिन साथ ही पंडित जवाहरलालजी नेहरू के फ्रेन्ड, फिलोसोफर और गाइड की तरह से थे। डेमोक्रेसी में इस बात की आवश्यकता होती है कि हम टीम स्पिरिट से काम करें, इस बात की आवश्यकता होती है कि जो भी साथी हमको मिलें वे ऐसे साथी हों जिनके दिल में एक दूसरे के प्रति दर्द हो, एक दूसरे का हाथ बटाने में सहायक हों।

हम देख रहे हैं कि आजादी के इन दस वर्षों में देश के बड़े बड़े नेता हम से बिछुड़ गये। कभी कभी ऐसा मालूम पड़ता है कि देश में इन लोगों के चले जाने से कहीं अन्धाकार न हो जाय। अखबारों में पढ़ने से ऐसा प्रतीत भी हुआ कि पंडित नेहरू कई बार रोये और वास्तव में यह ऐसा ही दुख का अवसर भी है। क्योंकि जिस आजादी को हमने लिया उस आजादी की रक्षा करने का भार सारी हिन्दुस्तान की जनता पर पड़ा और उसमें से खास लोगों पर जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी उन पर अधिक था। आज वे लोग एक एक कर हम से बिछुड़ रहे हैं। मौलाना आज़ाद के नजदीक आने का हम लोगों को थोड़ा अवसर मिला है, हम जब उनके सामने जाते थे उस समय हमारी एक विशेष प्रकार की स्थिति होती थी। एक नेता के सामने, प्रेम से, श्रद्धा से और भक्ति से जाते थे और साथ में भय से भी जाते थे। मौलाना आजाद इस प्रकार के नेता थे कि जिनके

Page No.5

(श्री भोलानाथ)

पास आसानी से जाने में भय लगता था, प्रेम भी उत्पन्न होता था और श्रद्धा भी होती थी। जब कभी आजादी के पूर्व या बाद में नारे हम लगाते थे उनमें महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ साथ मौलाना आजाद को भी नहीं भूलते थे। ऐसे सर्वमान्य नेता के हमारे बीच से चले जाने से हम लोगों को हार्दिक खेद है। यह इतनी बड़ी शक्ति थी कि जब पिछले सप्ताह में टी. टी. कृष्णामाचारी इस्तीफा देकर गये उस अवसर पर मौलाना आजाद, जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, मौजूद थे। गोहाटी खुद की बीमारी के कारण नहीं जा सके थे। लेकिन शिक्षा के सवाल का इतना ध्यान था कि अपने स्वास्थ्य के ठीक न होते हुए भी वे पार्लियामेन्ट में उपस्थित रहा करते थे; उनका हमेशा यह खयाल रहा करता था कि कहीं किसी भी प्रकार से गफलत न हो। वे हमेशा मार्ग दर्शन के लिये तैयार रहते थे। यही वजह थी कि वे इस अवस्था में स्वर्गवासी हुए, जो विभाग उनको मिला हुआ था, उसमें शिक्षा का जो विभाग इनके पास था, उसके महत्व की दृष्टि से मैं कुछ कहना चाहूंगा। इस सिलसिले में मुझे उनसे मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ था और उनके पास जाने का मौका भी मिला था। आप इस बात को जानते हैं कि शिक्षा प्रान्तीय विषय है, लेकिन मौलाना आजाद के पास यह विषय होने के कारण वे ही एक ऐसे नेता थे जिन्होंने इस शिक्षा के विषय को केन्द्रीय विषय बना दिया। पिछली पंच वर्षीय योजना के अवसर पर शिक्षा के लिये बहुत कम पैसा था, जब हम उनसे मिले उन्होंने कहा आप जिस तरह से देश का निर्माण करना चाहते हैं उसमें थोड़े पैसे से भी काम चलेगा। लेकिन आपको यह मालूम होगा वे ही ऐसे व्यक्ति थे जो शिक्षा के लिये इतना पैसा दे पाये। यहां पैसे का महत्व नहीं, लेकिन इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि देश के निर्माण की उनको कितनी चिन्ता रहती थी। उनका ऐसा विचार था कि अगर सोशियल और इकोनोमिक रिवोल्यूशन लाना है तो हमें पहले शिक्षा की ओर ध्यान देना होगा। ऐसी महान शक्तियां जो आजादी की लडाई में भी बहादुर रहीं हों और बाद में भी जिनको बराबर इस प्रकार की चिन्ता रही हो और देश की आजादी को मजबूत बनाने में प्रयत्नशील रहे हों स्वास्थ्य के ठीक न होते हुए भी, ऐसे बहुत कम नेता होते है। जब महात्मा गांधी की याद आती है तो वे भी अन्तिम समय तक देश में काम करते हुए इस देश से विदा हुए, सरदार पटेल भी उसी तरह विदा हुए और रफी अहमद किदवई साहब भी देश के लिये काम करते हुए विदा हुए और इसी तरह दो दिन पूर्व हमारे मौलाना आजाद भी देश के लिये काम करते हुए विदा हुए और वीर गति पायी। वीर पुरुष वे ही हुआ करते हैं जो कार्य क्षेत्र में काम आते हैं, जहां तक उनकी व्यक्तिगत बात है वे भी वीर गति को प्राप्त हुए। अपना देश निर्माण करते हुए भले ही वे आजादी की लड़ाई में काम न आये हों लेकिन देश के निर्माण में वे काम आये। देश को उनकी हमेशा याद रहेगी। सन्' ४२ का अन्दोलन उनके नेतृत्व में ही चला। आज हमें दर्द इस बात का है कि हम सब लोग एक बड़े नेता, एक सोबर व्यक्तित्व और खास तौर से हमको आगे बढ़ाने वाला, प्रेरणा देने वाला व्यक्ति खो चुके। आज जब की देश को एक सूत्रता में पिरोने के लिये वे प्रयत्नशील थे जाहिरा में वे हमारे से हट गये हैं, इस वजह से हम सब लोग।

(श्री भोलानाथ)

दुखी है किन्तु उनकी आत्मा और उनका व्यक्तित्व हमें इन कार्यों को पूर्ण करने में बल देगा। इसलिये मुख्य मंत्री ने जो प्रस्ताव रखा है उस में मैं अपने विचार रखते हुए उनके प्रति हार्दिक श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि जो उनके नाम से हमें शक्ति प्राप्त होती थी, जिनकी वजह से आज हम इस जगह हैं, उनका नाम लेकर ही हम इन्कलाब कर सके हैं, आज हम एक प्रकार से उनके वारिस हैं ईश्वर हमें शक्ति दे कि उनके बताये हुए मार्ग पर हम चल सकें और हम अपने काम को पूरा कर सकें।.

श्री बरकत्तुल्लाह् खां (जोधपुर द्वितीय कांग्रेस) : जनाबे सदर, जो इन्सान पैदा हुआ है उसको मरना ही पड़ता है, मौत से कोई नहीं बच सका है, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो मरने के बाद भी हम लोगों की जिन्दगियों पर अपना असर कायम रखते हैं। उनकी ज़िन्दगियां ऐसी होती हैं जिनका लोगों पर कब्जा बना रहता है। मैं समझता हूं हमारे मुल्क में तिलक, महात्मा गांधी, सी० आर० दास ये ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इस देश में नई जाग्रति पैदा की और देश को बहुत आगे बढ़ाया, जब इस मुल्क और कौम को आगे बढ़ाने की जरूरत थी दुनियां में अपनी जगह लेने की जरूरत थी, इन लोगों ने अपना अपना काम किया और देश को आगे बढ़ाया। मौलाना आजाद भी इन्हीं व्यक्तियों में से एक थे, उनके इन्तकाल के बाद ऐसा मालूम पड़ता है कि देश ने एक हीरा खो दिया। इन्सान चले जाते हैं लेकिन उनकी ऐसी बातें होती हैं जो हर इन्सान के दिल में घर कर लेती हैं। मसलन मौलाना आजाद उन मुसलमानों में नहीं थे जो देश को गलत रास्ते पर लेजाना चाहते थे, उन्होंने देश के काम को सब के आगे रखा, मुसलमानों को एक जाति विशेष के दृष्टिकोण से नहीं देखा। बहुत मुसलमान यह चाहते थे कि मौलाना साहब मुस्लिम लीग में शामिल हो जांय लेकिन मौलाना कभी मुस्लिम लीग में शामिल होने वाले नहीं थे, उन्होंने कभी इस इरादे से नहीं सोचा कि हिन्दू और मुस्लिम अलग अलग हैं वे सब को एक ही देश के वासी समझते थे। सन् ४२ में मि० जिन्ना चाहते थे कि मौलाना साहब मुस्लिम लीग में शामिल हो जाय, उस समय हिन्दू मुसलमानों के ताल्लुकात कुछ कुछ खराब होने लगे थे। लेकिन ये उनका अपना एकता का सिद्धान्त था इसलिए मि० जिन्ना नाराज होकर यह कहा करते थे कि "मौलाना आजाद तो कांग्रेस के एक शो बॉय हैं।"

मौलाना आजाद के वे दिन याद आते हैं जब कलकत्ता के मैदान में मौलाना मुसलमानों को ईद की नमाज पढ़ाया करते थे, कुछ मुसलमानों ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा मेरे पीछे अगर एक भी मुसलमान नमाज पढ़ने को तैयार नहीं है तो मैं नमाज नहीं पढ़ाऊंगा और इस उसूल को उन्होंने जिन्दगी भर निभाया। जो लोग इस्लाम के नाम पर लड़ाइयां लड़ना चाहते थे उन सब से अलग रहे, उन्होंने कहा ऐसे लोग जो इस्लामके नाम पर लड़ते हैं वे मेरे से अलग हैं। मौलाना साहब ने कुरान शरीफ पर उर्दू में कमेन्ट्री लिखी और इस तरह एक बहुत बड़ा कॉन्ट्रीब्यूशन इस्लामिक लिट्रेचर में किया जो हमेशा याद रहेगा। यही नहीं बल्कि अगर मैं अर्ज करूं कि सोशलिस्टिक पैटर्न, जिस के लिए हम आज बात करते हैं, वह चीज मौलाना के दिमाग में

(श्री बरकतुल्ला खां)

वर्षों पहले से मौजूद थी । मुझे याद है जब मैं उनसे एक बार सन् ४५ में मिला था तो उन्होंने फरमाया था कि मजदूरों और किसानों को आगे बढ़ाना पड़ेगा अगर मुल्क को आगे बढ़ाना है तो । जमींदारी और जागीरदारी खत्म करनी पड़ेगी अगर मुल्क की तरक्की हमें देखनी है तो, इन विचारों का प्रकाश जो मौलाना ने इस देश पर डाला, वह आज भी चमक रहा है । तिलक व महात्मा गांधी के प्रकाश के बाद अगर और किसी का प्रकाश पड़ा तो वह मौलाना का ही प्रकाश था । मौलाना के इन्तकाल से हम एक खाई महसूस करते हैं जिसे भरना आसान नहीं होगा ।

मौलाना की बीमारी से एक रोज पहले मैं उनसे मिला था और चार पांच मिनिट तक मेरी उनसे बात चीत हुई थी । उस वक्त भी उनकी बातों से ऐसा लगता था कि आज भी उनकी रगों में वही खून है और हम नौजवानों को वे आगे बढ़ने के लिए ज़ोश दिलाते हैं । वे हम नौजवानों को आगे बढ़ाना चाहते थे और हर चीज पर उनका दिमाग साफ था, उनका विचार साफ था । मुल्क को ऐसे लोगों की अभी जरूरत थी जो बुरेवक्त पर मुल्क का साथ दे सकें । पर जो तिलक के जमाने से शुरू हुआ था उस दौर की आखरी कड़ी टूटी और वह दौर आज खत्म हुआ । अब नया दौर शुरू हुआ है । खुदा करे जो रास्ता महात्मा गांधी, तिलक और मौलाना आजाद ने हमें बताया हम उसी रास्ते पर आगे चल सकें । इसके अलावा मौलाना जैसी हस्ती के लिए मैं क्या अर्ज करूं । उनकी जो तमन्ना थी कि हिन्दुस्तान एक शानदार मुल्क व कौम बने तो हम उनके बताये रास्ते पर चलकर उनकी तमन्ना को पूरी कर सकें और शान्ति की शानदार जिन्दगी बसर कर सकें तो यह महात्मा गांधी और मौलाना आजाद की सच्ची यादगार होगी । जय हिन्द ।

श्री अध्यक्ष : आज मौलाना अबुल कलाम आजाद हमारे साथ नहीं हैं । उनके निधन से हमारे राष्ट्र के जन-जीवन को एक बहुत ही बड़ी चोट लगी है और उनके चले जाने से हमें एक ऐसी क्षति हुई है, जो मैं समझता हूँ, कि हम कभी पूरी नहीं कर सकते ।

सदन के नेता ने, विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों ने व अन्य सदस्यों ने जो अपनी भावनायें व्यक्त की हैं उनमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं ।

मौलाना आजाद बहुत ही उच्च विचारों के आदमी थे और पिछले तीस–चालीस सालों से हमारे देश के उच्च कोटि के नेताओं में से थे । वे एक बहुत बड़े विद्वान् थे और उनके लिखने व बोलने का एकबहुत ही सुन्दर व प्रभावशाली ढंग था । लेकिन सबसे बड़ी बात, सब से विशेष बात, जो उनके लिए थी वह थी उनका राष्ट्र प्रेम और उनकी राष्ट्रीय भावना की बात । वे एक बहुत ही उच्च सिद्धान्त को लेकर चले और आखिर तक उन्होंने उस सिद्धान्त को निभाया । उनके चले जाने से आज हमारे देश में बहुत ही शोकमय वातावरण है । लेकिन इस वातावरण में उन्होंने जो अपने विचार और सिद्धान्त पीछे छोड़े हैं वे ऐसे प्रबल और प्रकाशवान् हैं कि जो मैं समझता हूं हमें अन्धेरे से उजाले की ओर ले जावेंगे ।

इस मौके पर और मुझे कुछ नहीं कहना है, यह मौका ज्यादा शब्द कहने का है भी

Page No.8

(श्री अध्यक्ष)

नहीं। मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे दो मिनिट के लिए मौन खड़े हो जावें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

[तदनन्तर दो मिनिट तक सदस्यों के खड़े होने के पश्चात्]

सदन की कार्यवाही कल ११ बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

[तत्पश्चात् सदन की कार्यवाही म. पू. ११.४५ बजे दिनांक २५ फरवरी, १९५८ को ११ बजे तक के लिए स्थगित की गई।]

संक्षिप्त–विवरण

(सोमवार, २४ फरवरी, १६५८)

स्वर्गीय मौलाना अबुल कलाम आजाद के निधन पर श्रद्धांजलियां

स्वर्गीय मौलाना अबुल कलाम आजाद, भारत के शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, के निधन पर सदन के नेता, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, मुख्य मन्त्री, एवं सर्व श्री रावल नरेन्द्रसिंह, मुरलीधर व्यास, जगदीशप्रसाद माथुर, मोहरसिंह, भोलानाथ व बरकतुल्ला खां ने अपनी अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए संवेदना प्रकट की। तदुपरान्त माननीय अध्यक्ष, श्री रामनिवास मिर्धा, ने जो भाव उपरोक्त सदस्यों द्वारा व्यक्त किये गये, उनमें अपनी भावनाओं को सम्मिलित करते हुए शोक प्रकट किया। इसके पश्चात् सदस्यों द्वारा २ मिनिट खड़े होकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई और सभा की बैठक प्रातः ११.४५ बजे स्वर्गीय मौलाना साहब के सम्मान में मंगलवार दिनांक २५ फरवरी, १६५८ को प्रातः ११ बजे तक के लिए स्थगित की गई।

मंगलवार, २५ फरवरी, १६५८ की कार्य-सूची

(१) सामुदायिक योजनाएं तथा राष्ट्रीय विस्तार खण्ड पर वाद-विवाद।

(२) मेवाड़ शिशु हितकारिणी सभा आज्ञप्ति (अनुपलनीयता) विधेयक, १६५७ की प्रवर समिति के सदस्यों की नामावली घोषणा।

———

शुद्धि-पत्र

(कार्य-विवरण, सोमवार, २४ फरवरी, १६५८)

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
२०७३	१८	आजाद इस राज्य के	आजाद इस राय के
,,	२०	उस वक्त अखबार निकालता	उस वक्त अखबार निकलता
२०७५	११	किसी का नाम स्वर्णिय	किसी का नाम स्वर्णिम
२०७७	२०	बाह्य शक्तिों से	वाह्य शक्तियों से